हृतीय—अध्याय

क्याल्क्योलिस हिन्दी कहानी में नारी—संध्याक : पुरुष—
रत्न, वर्षा और गौरव के संदर्भ में।
30. खाल-खोलतर हिन्दी कहानी में नारी संघर्ष :
पुरुष तत्त्व, शासन और शोषण के संदर्भ में

मनुसूरति संग वेदों में आदर्श समाज की स्थापना के उद्देश्य से पुरुष को आक्रामक स्त्रों से निर्वहन बताया गया। विशेषतः श्रवण में लिखा है: "पिता रक्षित कौमार, भगता रक्षित यापने, रक्षित स्थाविरे पुत्रा न रों स्वामित्व महिलाँ। 5/12, 2/13, 44, 45। इसका अर्थ है कुछ आदर्श में नारी की रक्षा पिता करें गा, यावत में पिता और बुढ़ापे में पुत्र। 1 अर्थात् पुरुष सर्व प्रथम श्रेष्ठ अपने परिवार पर करने लगा परिणाम स्वतः पुरुष शीश्वक वर्ग का प्रतीक बना और स्त्रों शीश्वक वर्ग की।

1। यह पुराण उद्धरण प्रस्तुत प्रवचन के प्रथम अध्याय - पृ. सें. 22 पर रद्दा गया है।
स्वातन्त्र्यपूर्व के भूमिका-संघर्ष के साथ-साथ नारो भी अपने
तीर्दशों के पुरुष-तत्त्व से मुक्ति के लिए अंतर्गत करने लगी । महात्मा
गांधी ने वास्तुविद्या आजादी का अर्थ लगभग माना जब देश की नारी राज
के 12 बार निर्माण घर से बाहर निकल सके ।

स्वातन्त्र्यपूर्व के देश का सम्पूर्ण प्रतिबिंब हो बदल जाय ।
" अंदरूनी की दासता से मुक्ति के बाद देश की भूमिका की सीमाएं घटने-
बढ़ने लगी । देश के विभाजन के दृष्टिकोण में जनता को " भावनात्मक,
विवादात्मक, मनोवैज्ञानिक और आदित्य हत्याक तथा प्रभावित किया । "
देश की व्यवस्था अवैधिकता को लगे चिस्ते मेरीका को प्रभावित कर
उसे संकीर्णता की परिधि में सौंपने को बाध्य किया ।

स्वातन्त्र्यपूर्व केले में राजनीतिक, आधिक्य संस्कृतिक
विधि परीक्षणों के दमाम ने दंडक परियोजना का विपरीत होने लगा ।
अधिकारिक परिवर्तन परीक्षणर तत्त्व पर नारी-वीरता में हुआ । आधिक
दंडाएं के कारण आदित्य के लिए कमाई उसे बाहर निकलता पड़ा यही
से नारी का आदित्य के लिए संध्याइन आरम्भ हुआ ।

आधुनिक बृहतोत्सव समाज में नारी प्रत्यवेदन में स्वातन्त्र्य हुई ।
नारी का दोटरे सत्ता ही घर, बाहर ही पर शोषण प्रारम्भ हुआ । इतकाल
में विलियम मैक्सम का संघर्ष उभर कर आता है ।

1. "संवेदनशील " परिचय विभाजन की एक भूमिका और एक क्षण संलग्न दा.नरेन्द्र मोदी - पृ. 25.
स्मरण के बाद ध्यान में आए विबन्ध परिवर्तन से कहानी —
cार प्रभावित हुए प्रतलय हजारा समूह का उदय हुआ जिसने कहानी
को नया आयाम देना आरम्भ किया। इसलिए "स्मरणार्थ कहानी"
शब्द का प्रयोग किया जाने लगा।

स्मरण के बाद सम्पूर्णे क्षेत्र के परिवर्तन से प्रभावित नारी में
नया अें छैदा हुआ उसने अपने वच को समझा अवर्गु उसने अपने आँखावर
को पटकाने को और अपने आँखावर संख्याता के लिए विविध पौर —
स्निग्धों से बुझे हुए संघर्ष करने लगी। यह परिवर्तित परिवेश स्मरण
अन्यों कार्यों से अलगा नहीं रहा।

स्मरण के बाद स्नो को विन्ध्य की तीव्रगाम प्राप्त होने
लगी परिशुद्ध: उसके व्यक्तित्व में भी परिवर्तन होने लगा। स्नो के
पारस्परिक स्व में उसके पिंतन, मूल्य दूसरे में परिवर्तन को इस उद्देश्य
से विविध प्रकार के आनुदोलन चलाए गए।

स्नो और पुरुष के पारस्परिक सम्बन्धों का पहला, आधार भूमि
और अपेक्षाकृत संस्कृत श्रेण है परिवार और दूसरा अपेक्षाकृत व्यापक और
समस्त क्षेत्र है समाज। इस अध्याय के आरम्भ में उल्लिखित स्नो के
प्रीति पुरुष की प्राथमिक भूमिका तय करता है कि वह परिवार के दायरे में
सीमित है यह भूमिका है पिता, भाई, पति और पुत्र को और प्रकारान्नता
से यह भूमिकाएँ पुरुष की सत्ता को उसके शासन, संरक्षण को स्नो के लिए
अनिवार्य बनाते है। स्मरणार्थ है वह शासक और संरक्षक की भूमिका
शोक में स्पष्टतः होने लगी। समाज के स्वयंतात्त्व में आकर यही भूमिकाएं बदलती हुई मात्राओं में धारण करती है। अतः नारी संघर्ष का मूलमूल आधार है पुरुष की इन विभिन्न भूमिकाओं के बदलाव के जरिए यात्रा करने वाले शोक, आत्म-प्रश्न और आनंद का विरोध। इसी कारण इस आदेश को दो आधारों पर प्रस्तुत किया जा रहा है। ३०१० पुरुष संघ, शासन और शोक के विश्व नारी-संघर्ष : पारिवारिक संबंध २० पुरुष संघ, शासन और शोक के विश्व नारी-संघर्ष : सामाजिक संबंध

इन संदर्भों में प्रस्तुत पुरुष की विभिन्न भूमिकाओं अथवा स्थायी रूप से पुरुष संघर्षों के विभिन्न आयामों को पहचान कर यथायोग्य बनाया गया है।

3.10 पुरुष संघ : शासन और शोक के विश्व नारी-संघर्ष-पारिवारिक संबंध :

3.1.1 पारिवारिक संबंध :-

सबसे पहले हम स्पष्टतः देख सकते हैं कि पुरुष नारी के शोक और शासन संघर्ष में सात विभिन्न दिशाओं में भूमिकाओं के लिए, शोक स्वभाव संरक्षण हीरे का विशेष लक्ष्य करते हैं।

"पुरुष द्वारा नारी का शोक या कि उन्हें समाज की उनके शोक और दमन में स्वतंत्र रिस्लेटारी तथा कर्षक समस्या-समाज की पहचान रही है। आदर्श मानव-समाज और हिन्दी वैश्विक जीवन जीने वाले आब के आदर्शसमाज में विदेशियों के समाजों को बाद दे दे लो करारे सातों से प्रायः विश्वव्यापी स्तर में, नारी " सेवक सेवा की नौशंका, उपैक्षिक और आदर्श जिन्तनी जीने को प्रवर्त रही है। इस उद्देश्य से
मायून संबंधतः दृष्टिकोण का सबसे काला युग का जा सकता है, जबकि नारो समानता व्यक्तित्व में मात्र भीम पिलास की "दलाल" बन गई थी। निकलते आर्मीन क्षेत्र में नारो के प्रीति दृष्टिवक्ताओं में बदलाव आया है और नारो ने भी अपनी लड़ाई लड़ने को तंगकप-शिकार से दुख को रखी है। पर अगर इस संघर्ष की दृष्टिकोण दौर हो है और दूल्म मिलणे आज भी, भारत में, नारो अगर नालो या भोजन दाला छोर पर ही है। पुलवे है और दढ़ ले है। दुख या दुख, दूल्म पुरुष पर अलौकिक है। अपने ध्वनिकार भी अगर उसे पुलवे से ही प्राप्त होते है। आज की दृष्टि अन्य अधिकार लघु टॉग करने के लिए अन्य भी ध्वनि ऑपर निर्मित करने के लिए भी है।" 1 जिसे हम नारो के विभिन्न स्थानों में कार्य कर देते हैं।

3.1.2 पिला-पुली संध्या :-

क्षात्रनुमार हिंदी कहानी में श्रीकुं के विश्व नारी संघर्ष का प्रिय दिला है। परिवार में पिला की भूमिका शालक के साथ-साथ होने की भी होती है। आर्थिक अभाव मुनह दृष्टिकोण दौर करता है। रिम पर्व में व्यक्ति लड़ाई अपने माता-पिला के लिए छोड़ दे हैं और नारी का आनंद का तम्बन बन जाता है। बदन ने उसकी दृष्टिकोण दो जाते हैं और माता-पिला उसे पिला के पर में बर्तन साफ़ करने के काम में हमा देते हैं।

1. "समीक्षा" अगस्-जुन 1993 - रिम्लरता - गोपराट्यार
भीष्म साहनी की कहानी "राधा-अनुराधा" में यही बात दर्जीया गई है। कहानी की नायिका "राधा" का परिवार में दोते स्तर पर भीष्म किया जाता है। राधा धोनी की बेटी है बाप सा मुलले की गली में इस्ती दा काम करता है। राधा उसी मुलले के लाल घरों में बाह्य, बर्तन का काम करते हैं। राधा का बाप राधी का तत्त्व स्वयं की कामई से परिवार का खर्च पलाता है और काम से निराकरण के बाद राधा को प्यार में क्षाना बनाना पड़ता है। यदि वह खाना नहीं बनाते हैं तो राधा का बाप उसे पीटता है। राधा जिन घरों में बर्तन का काम करते हैं, उनमें सबसे अधिक पतन का प्यार उसे प्राप्त का कला है। पृथ्वी, राधा को पाहते हैं और उसे कुछ खाना को देते हैं। राधा के घरवाले इसी विवाह में साथ राधा की रोटी का तो क्षाना नहीं रखते क्योंकि उसे प्राप्त का घर में भील भिज जाता है।

राधा का बाप राधी का समय-समय पर इतनाम बापालिंग पैदा है कि मुलले बालों को ध्यान रखे कि उसका बाप मुलले में ही उपस्थित है। अक्सर राधा को रौठ के दिन टेलिपियॉन पर फिल्म देखने का अनुरोध वापसी होता है। फिल्म देख कर वह अपने घरवालों के वीडियो से बचना भी पाते हैं। राधा, रूपामा के घर बाम समय में बाने के बाद टेलिपियॉन पर फिल्म देखने के लिए यद्यपि बेहतर जाते हैं किन्तु पृथ्वी उसे अपने घर जाने के लिए कहते हैं राधा इसलिए विरोध करते हैं "देखो बबोरों, जो फिल्म होगी, तो मैं देखकर जाऊंगा। घर जाते हैं तो सबके लिए खाना मुझे बनाना पड़ता है। इस सात घरों का काम करते हैं उधर भाकर खाना भी बनाते हैं। अगर फिल्म देखकर जाऊंगा तो रिली, फिल्म होगी खाना तो,सिफ्न पिटाइ होगी खानने तो नहीं बनाना पड़ेगा।" ।

10. वाइ.पु. : भीष्म कहानी - पृ. 133.
इस कहानी में दोपहर तार पर शोक पर रात्रि के विख्यात राजा के संघर्ष को देखा जा सकता है। लेखक बताते हैं "सरेद साल की उम्र में ही राजा ने जिन्दगी का बहुमूल्य पाठ होले रखा था। कोई फर्स्ट नहीं पढ़ा, पिक्सी बात से कोई फर्स्ट नहीं पढ़ा। खाओ, न बारे। सो जो, न तोसो। देर से जाओ सबरे जाओ, फिसी बात से कोई फर्स्ट नहीं पढ़ा।"

3.1.3 परित-परनी संबंध :-

स्वातन्त्र्यावर डिंडू कानी मे परित द्वारा परनी पर संरक्षण के लिए शासक की भूमिका निभाए हुए शोक पर विचार बनाने देखा जा सकता है। आधुनिक युग में समाज की नैतिकता द्रुपद पर है व्यापक नैवेद्य करता है और अपने पार्श्व का परिश्रम करता है उसे अपने कार्यवाह तथा कामने में अपने सामूहिक साधनाओं पर निर्भर होता है।

पूर्व बाल की कहानी "पराजित" इसी बाल को लेकर पतली है। कहानी का नामक बंसल प्रमोशन पासता है डिंडू द्वारा उकसान आप्सरा की कुटनीति के कारण उसे प्रमोशन नहीं मिल पाता बल्कि उसका खमाय तुलना को बाल के कारण बंसल पिड़ोप्परा भी होता है। इस साल तक उसका प्रमोशन ख्म रहता है। कम्पनी में कई दूरीय, सीटिस और मैनेजर तक पदोन्नत होते हैं बंसल का मित्र बंसल को बताता है जब उनकी
तरक्की के पीछे उनकी बीतन्त्रों का ढाप है। बंतल में भी स्वाभिमान होता है यह अपनी बीबी द्वारा असरों को खुद करवा कर प्रमोशन लेना पाए है। अपनी पत्नी निशाने से यह अतुलनीय होता है कि पार्टी में यह मैं तो पहले जिसके असर आड़ियागृह हो लेकिन निशाने पति की बातों से पीछा होता है और दोनों में मानसिक लीप्स उत्पन्न होता है। निशाने बनता का दिवरोध करती है यह सारीरिक फिटनेस के विचार संबंध करती है। 

पति कहते हैं कि "फूटोग और यह सब कींगों जो मिलेंगे मिलने करते हैं, तब तक करते रहूँगी जब तक हमें प्रमोशन न मिल जाय और उसके बाद अगर कभी आर्थिक करने की भी साधन ही हो मरने से पहले यह जब जागरूक करूँगे कि उस समय बदन पर पाने बढ़े और बात ढूंढ से हो, हमारी पोर्डिंग अनुसार, कहने हमें अपनी मार हुई बीबी के बढ़े देखकर लोगों के सामने शरीरभावना न उल्लास पढ़े इत्यादि मैं करते हैं।"

दाम्पत्य जीवन में पति-पत्नी के विपरीतों में ज्यादा आक्रामक होती है। विपरीतों में भिन्नता के परिणाम स्वतंत्र संघर्ष उत्पन्न होता है। पिजा मुद्रण की कहानी "बाबुलु इतने इतने बातों को लेकर चलती है। कहानी की नाज़िक प्रीति का स्मरण अपने पति गोयल के स्मरण से मेल नहीं खाता। गोयल को कबों में रातों दिन जाने तथा बड़े होटलों में भोजन करने का अधिक शासक है। प्रीतिदेव पति-पत्नी में झड़ा होता है। गोयल, प्रीति को पीड़ा है गोयल की मानसिकता से गोयल का भाई जलन भी लाग होता है। प्रीति गोयल के दुर्भाग्यस्त तो पीड़ित मां के घर पहले जाता है। दूरबाहर न होने का निर्धारित लेता है वह गोयल को।

10. धौली भर पाँड - दुर्बाहर - पृ 86.
तम्भुना विषेष के लिए पत्र किया है। विषेष के कारण मेरा यकीन
भेज रहा है जो रिस्पीट है उसके लिए को स्वीकार कर लेना ही दोनों
के लिए बुध-सुभा विकल्प है। अलग होने के लिए मैं तुम पर कोई कारण
नहीं किया खप रहा है। बस मैं अलग होना चाहती हूँ। बुधकार गिरिणे।
माँ, मेरा और माधव इस पक्ष में नहीं किन्तु जब मैं किसी पक्ष-विद्यक
की दुःखों बनकर नहीं जी सकती। मोना, कीपित होती तो
शायद उसे बाप का नाम देना बल्कि होता। तब शायद... या
शायद मेरा यह सोचना भी गहरा हो। शायद तब भी यहीं बना...
कर।... यहाँ "गोकुण्ड काण्डोन्नगथ्" में रिस्पीटन्नर के पद
पर हैं। अन्य तक्षिप्त है। इस नौकरी के लिए गैर-बाली-बूढ़ा
ही आपेखन कर लड़े है मै यही बाली रिखा है। यानी पत्नी
की भावना ते में पहले ही मुरक कर पता चला है अब आपराधिकताओं पर
हमें मात्र हलकाकर करना है।...। 1. यहाँ प्रति के शोधन के
पित्तल पत्ती के मुक्त संघर्ष को दर्शाया गया है।

नौकर वेंक पत्तिका तालामुक्त पद्म में काम करने वाली
महिलाओं में प्रेम का नाटक रचता है। स्वीकृत कामिया की कहानी
"काला रेसिस्ट" में नौकरी वेंक पत्तिका के तालाब का पित्तल हुआ है।
दफ्तर का एक सदर बिस्तर का नाम "रोटा" है जो पित्तल में दिलपप
आदमी भी है वह पित्तल है और उसके पार चलने है यह दफ्तर का एक
महत्ता "क्याबी" से प्रेम का नाटक करता है। छोटे की पत्ती को यह
छाँट रिखती है तो वह पहले विवाह नहीं करती बल्कि यह दंस देती है
जब छोटे की पत्ती छोटे के व्यवहार में परिवर्तन देखती है परिवार

10. स्वार्थ केम्ब्रिज वाटर वॉर - पित्तलकुंडर - पृ 144
के प्रति उसकी लापरवाही देख वह छोटे के प्रति अपना संदेह जो देती है।
प्रेम का अभ्यास लापरवाही के प्रति अपना संदेह जो देती है।
उसने एक अच्छी सुबह बच्चों को छोटे के सामने पटक दिया और हमेशा के लिए मैंके लौट जाने को आमंत्रित कर दिया।
छोटे उस दिन दफ्तर के "पाल" से छायाजो को अमरोली वांछन कर लौटा था और अपने मुड़ में था।
"पागल हो गयी हो क्या वह बोला। हाँ, हाँ पागल हो गयी है। क्या ही वह दुखेंगाँ फिर उसका भूल कर दुखेंगा। छोटा वांछन कर लौटा था और इस तरह इसे अवर न था, बोला, हार्दिक, खुशे गलत मत लगाने। प्रेम की कसम, मैंने कोई गुंतार नहीं दिया।
छोटे की पतंज छोटे की कसम वह ये की आते नहीं हुआ, उसने अपनी उतारों और दस्तानों की तरफ ध्यान दिया। प्रेम उपदेशक कांग्रेस ने नारों के लिए एक दूरी पर छाया गया का एक दूरी प्रस्तुत किया है।
"उसने नौकरी की जगत देखकर करे पर उसको समझा कर रखो कि वह महाराणी है।"  

मुन्नाहू उपाधिकांतों है अपनी महत्वाकांक्षा की प्रतिक है।
मुन्नाहू उपाधिकांतों है अपनी महत्वाकांक्षा की प्रतिक है।
पहुँच पूरी तरह से प्रथम प्रकाश के प्रथम अंकाय - पृ. 26.

1. गली बुझे - रवीन्द्र काशिया - पृ. 205.
2. यह पूरा उत्तरेण प्रस्तुत प्रवचन के प्रथम अंकाय - पृ. 26.
शिष्यमूर्ति की कहानी क्लाई बांटा निम्नमानसी नारो के शोभन के विस्तृत संग्रह को लेकर पतलता है। इन कहानियों में गांव का लॉडर गांव के प्राच्यकर स्वतंत्र का माल्य है। उसे गाँव का फ़्राक्शन बनने की लतास होती है जब गाँव के फ़्राक्शन द्वारा गांव के लड़कियों को बेहोश जाने की सथापना का परिवर्तन करता है और लोगों में अपनी विश्वसनीयता कमाने का प्रयत्न करता है। वे ही लड़कियों में कहानी को नारियाका "शिष्यमूर्ति" की पुजी भी एक है। लॉडर शिष्यमूर्ति को फ़्राक्शन के विस्तृत संग्रह के लिए लैरार करता है।

शिष्यमूर्ति लॉडर के को अनुतार फ़्राक्शन के घर के सामने अमून करते है लॉडर स्थापन है कि शिष्यमूर्ति अन्वेषन करते, एक रिहन मर जायामी। वह शिष्यमूर्ति के मरने के पहले ही शिष्यमूर्ति को जा कर दो बीज देते। अपने नाम खर लेता है। फ़्राक्शन शिष्यमूर्ति को अन्वेषन न तोड़ते पेड़कृत फ़्राक्शन में विख्यात रिहालकर उसे पिलाता है शिष्यमूर्ति मर जाती है। लॉडर द्वारा लेता है ज्ञान की ख़बर शिष्यमूर्ति के मरने के बाद गांव में फैलता है। लॉडर द्वारा लेता है ज्ञान की ख़बर शिष्यमूर्ति के मरने के बाद गांव में फैलता है। लॉडर द्वारा लेता है ज्ञान की ख़बर शिष्यमूर्ति के मरने के बाद गांव में फैलता है। लॉडर द्वारा लेता है ज्ञान की ख़बर शिष्यमूर्ति के मरने के बाद गांव में फैलता है। लॉडर द्वारा लेता है ज्ञान की ख़बर शिष्यमूर्ति के मरने के बाद गांव में फैलता है। लॉडर द्वारा लेता है ज्ञान की ख़बर शिष्यमूर्ति के मरने के बाद गांव में फैलता है।

1 क्लाई बांटा - शिष्यमूर्ति - पृः 87.
स्वातन्त्र्योत्साहित भिन्नी कहानी में भारतीय नारी की दयनीय प्रवृत्ति को दर्शाया गया है। परिवार-पतली के सम्बन्धों के विपर्ययात के बाद भी कानून पतली को संलग्न पर अधिकार की अनुमति नहीं देता। गेहूँ कुछ वर्ष संलग्न को मां के संशोधन में रहने की कानून अनुमति देता है और उसके बाद पतली ही संलग्न का अधिकार होता है।

पितामुखुल की कहानी "पून्य" में इसी बारे का प्रतीक मिलता है। कहानी की नायिका "सलरा" है जिसका पत्ता "राकेश" और पुत्र दोपु छा। राकेश की प्रेमिका बेला है सलरा से विवाह के बाद भी वह बेला के साथ रहता और सलरा से कुछ दिनहरा करता है जिसका परिणाम दोनों का तलाक होता है। राकेश दोपु को कानूनी पैसे ले एक दर्दी ही अपने साथ हे जाना पाता है। सलरा इसका दुर्दर्श करती है।

"एक दिनदान भरो सुरक्षा उसके हॉटों पर दिखा आयी। आज बेला उसके साथ दिनदान पतले गए है। आज उसके पास कुछ दिन है जिसके लिए बेला पुरी जिन्दगी भर तरसती रहनी । और तुम्हारे रहनी । आज लड़का उसके और राकेश के बीच भी है उसके और बेला के मन के और वह बेला के लगातार मास की दिवास सत नहीं की सकती। बहरी में एक शून्य उसकी जिन्दगी का तमस्कर है। आज बेला को भी उसी अंदरों दुनिया भरो लोहे से मजबुरा वौँ। दोपु नहीं पा सकती वह। दरिंदी, नहीं राकेश और बेला से अब के कोर्ट में हो मिलेगी और देखेगी कि दुनिया का बान-सा कानून उसके उदाहरण का धीरा कर बेला ही गोद भर सकता है।... चाहे उसे सुनोम कोर्ट तक हमना पड़े।... यहाँ पत्ता द्वारा शोक किन एवं अधिकार प्राप्त हों के लिए नारी संघर्ष को देखा । जा सकता है।

101
नारो मानकीय अलस प्रारंभ के लिए संघर्ष करते हैं। उदय द्वारा दी भैंसा गारं, को जीवित द्वारा भी आवश्यक होती है। शारीरिक शुभ की बात यीद स्थिति करते हैं। तो उसे अलील का बात्ता है भूष्णा सोहतों की कहानी। “मित्रो मर्यादा” दाम्पत्य जोड़न में जीवित संघर्ष में अद्वैत नारो संघर्ष को दर्शाती है। कहानी को नायिका सती मारुपात्रों अपने परिवार से वास्तविक अद्वैत के पिल्लू संघर्ष करते हैं। परिवार में विभिन्न परिवारों से उत्पन्न संघर्ष के साथ-साथ मित्रों का जीवन तार पर उत्पन्न संघर्ष का मूल संघर्ष है।

मित्रों को माँ बालो त्याकाफ है। किंदू मित्रों एक आदर्श परिवार के बड़े वह आदर्श जोड़न जोते हैं। सत्यता बाले उसकी भादनाओं की कोई बुद्धि नहीं करते वह अपने परिवार द्वारा उपेक्षा है। मित्रों संस्कृति बनवारों को ब्रह्मकेतु देख मित्रों को तास धनरायने अपने बड़े बेटे को बुलाते हैं। और वहां समाप्त करने के लिए कहते हैं। बेहद बनवारों अपनी पत्नी बुद्धि में कहता है। कि मित्रों को लेकर अपने करारे में लोगों और सरदारीकार संस्कृति बनाते वारोलाल को एक करार में लोगे। देख मित्रों। "माध्य पर हाथ शार हंसी - बुरे माध्यमाले। मर्यादा होते तो या चक्करे हैं। ले मुझे चाँदी या फत्ते बेर की तरह कच्चा चबा डालें।

बुद्धि ने देवरानी को और ताला नहीं ढालना बूंद बिठाई और डालकर बोली - बुन मित्रों, धमो राय भई। अब पिन्ना संवाल छोड़ दिनब आराम कर लो। मित्रों ने ओह बिठाए पिन्ना संवाल किसको? में तो पिन्ना करने वाले के तेज हो नहीं पड़े।
धि: धि: । सुनकर छटाग के बाल बलने हो। मित्रों उठ छूटया के पास आई। पहले विकास उत्तम, देस टटोला फिर उल्ट-पलट सिरहाना टटोल बोली-जिहानी, हमारे देवर या बगलोल कोई और दुनिया न होगा। न हु उठ-सूढ़ न प्रोट चार न जलन-प्यास बल आस दिने धौल-फुंका।

एकाक आँखों में कोई मद उत्तर आया। छूप गले की ओर नींद उतारी कुरसा, पिर खाक उतार परे फेंक दी और हंस-हंस बोली-बनाययो कहता है, मित्रों, तेली देख कह तनाव विकस है ती ... रा। उस ताली होने से कहता हूँ ........

— अरे इसी शीरे में तेरी जान को हंस मारे सपने की फोले पालती है।

मित्रो नियंत्रित से आगे बढ़ते हैं देवर हुमारा मेरा रोग नहीं पद्धारण मीरा हुआ हम फिर पकड़ते हैं ....... और मेरी इस देख में इतनी प्यास है इतनी प्यास रक माति सी हामिता हैं।

ख्वालन्योत्तर हिंदी कहानी में उपकर्ष को हूँ तो प्रिंटमा के विस्तार नारी संघर्ष को देखा जा सकता है। ख्वालन्या के बाद की नारी मानवीय अच्छा प्राप्त बनना पालती हैं उपकर्ष से देव महत्त्व का रोक्ता करता रहता है। निस्मम मेंवी की कहानी "पालाक" की नाथिका।

"मीरा" मक्कामीय नारी है उसे सुहृत में दस्तू की भीति कष्ट समझ जाता है उसका पीठ घिराते रूप दिनों बाद केन्द्र फला जाता है और वहाँ उसका प्रेम संस्कर्ण सिल्पा नामक स्त्री के संबंध में रहता है। यह बाण कारो मीरा को अपने पीठ का भित्र "सुनील" से प्राप्त होता है।

सुनील यह मीरा की धीनश्रोता मिलता होता है। वे बाहर धूमने भी बारे है परन्तु सहस्राण वाले अपनी डूबो खूनी प्रशिक्षण बनाये रखते सुनील के साथ मीरा के बाहर धूमने पर रोक लगा देते है। मीरा की जिद्दी कहते है सुनील को अपने कमरे में ही बुलाकर अपनी आचेस्वरता की पूर्ति को बांटते है। बाहर धूम के समाज में घर का विभाग न बने और सहूर द्वारा ज्ञानदाय का नाम बदलना न करे। मीरा जिद्दी से पूछते है रंग का संबंध यद्यपि पहले से ही सिल्पा ते ध्वार तो कन्ही उसे व्यापार कर हाया गया। इसका साफ़ उत्तर जिद्दी देता है रंग उसके सहूर को सिल्पा जैसे डोली लोगों के बच्चों के दादा वह नहीं बन सकते। मीरा इस बात का उट कर विरोध करते है। यह कहते है "और। अपनी एक जरा-सी इतनी बड़ी बात बन जाती है अट्ठार और यह जो डोली कल्प है — इससे बर नहीं लगता।"

1. कबीज मकान - नित्यमा सेवती - पृ. 39.
कोई भी सम्भव विश्वास पर आधारित होते हैं। पति-पत्नी के सम्बन्ध का आधार एक दूसरे पर पूर्ण विश्वास ही होता है। उथा प्रियंभद्रा को कहाँ "दो अंगें " में कहां की नायिका कोशल्या का पूर्ण विश्वास अपने पति पद्मावति पर होता है वहीं पद्मावति कब उसके पति पद्मावति को लड़की "बहुं " को साझा मेंट करता है तब उसका विश्वास पद्मावति पर समाप्त हो जाता है। कौशल्य कहता है "हमने मेरा विश्वास लोड पिया पिया, हमने मुझे छा। क्या मैंने हमें प्यार नहीं पिया, क्या मैंने हमें अपना शेष नहीं पिया? में कहते में भी मुझे अपनी रहती, धर्म में हो सन्नाट होती उसका बदल हमने मुझे इत तरफ पिया।

......"। यह पति पर आदर विश्वास के लिए नारी संघर्ष को देख जा सकता है। लेखक कहता है उसकी बातें पर पद्मावति क्रृष्णा होकर धुंध रह जाता है। अतः में कौशल्य ने यही निविषय रखा कि महाकाव्य बदल पिया नायिका। वहीं ही नया महाकाव्य मिला, उसने घर बदल पिया और उन्हें रोपे हुए पिये, यद्यपि लगाये घर को एक बार भी बिना मुझे देख निर्मित बन पते बने।

लाखन-सोहर हिंदू कहानी में मानसिकता-समृद्ध संघर्ष का पिच्चर भी मिलता है। समाज में नारी पुल्ल की भीरसुर वस्तु का अवस्थापन के सम्बन्ध में सम्बन्ध की अधिकारिणी होती है। राजसेती की कहानी "किसके पक्ष में "एक पारिवारिक कहानी है जो पति-पत्नी के बीच मूक संघर्ष को दर्शाती है। कहानी की नायिका "बेला " एक ख्यातिभारी नारी है जिसे ब: वर्ष की पुत्री है बेला का पति "पिकी " बेला पर लगाये गये।

1. बिहारी को खुलास के पूरा: उथा प्रियंभद्रा - पृ 101.
पारितश्च आरोपों के वारण दोनों का विपरीत होता है। दिव्य का मित्र ज्ञान का सिद्धांत अधिक आदर करती है और विषय के बाद अपनी पुरी नील को खोबर जरूर से लेती है बेला पिठौट अपने हितकार से लाई थी और दिव्य की अपनी आवश्यकताओं अपने हितकार से व्यक्त करता है—अपने निर्णय पर कायल रहने के लिए चड़े होकर संवाद अपने रखने की दक्षता करता है। में यह मैं सामान्य नहीं सका 2 चार स्पर्शक उलापनों और पोरों का हितकार खोला का सकार है, परन्तु यह दर्द को नहीं होता है जाला, जीवन की कोई दिल्लगी इलाके नहीं मिलती हुले आम लड़ाई इससे अलग है।

मानने अपनी आपू के अनुसार ही अपने साथी द्वारा आत्मविश्वास को अपेक्षित रखता है। आत्मविश्वास के अनुसार में मानसिक तनाव बदलता है जिसके पारिस्थितिक से संदर्भ अग्रवर्ती होता है। मूलता गर्म की कहानी "पिठौट" में पोर-पलानी के बीच अन्तर्गत से उत्पन्न मुक्त संस्कृत का विज्ञान मिलता है।

कहानी की नायिका शार्लीनी बीलियर पूर्व अपने पील से खुशकर बात करना पाती थी। किन्तु पील आपिस को फैला में निरंतर उल्लम रहता था। शार्लीनी कई बार निवेदन कर लुढ़की किया के परन्तु दिनदहर हनकार करता है और कहता है उसे काम से पुर्वत नहीं है। शार्लीनी को वह सुकार देता है कि वही शार्लीनी का वह चक्कर बता है बो घर को पूरे सबके से पला और उसे मैं बात करने को पुरात नहीं रखते।

106. अन्दे मोट से आये — राजी सेठी — पृ. 93.
पीत-परी में अगाध बोल वर्ष तक निरंतर बना रहता है।
दिनभर जब रिटायर हो जाता है तब उसे शारीरिक के साथ बात करते रहते हैं।
शारीरिक द्वारा आर्थिकल हो विपदप्रभु होती है।
यह सोचता है
कि अब उसके पास काफी समय है वह खुश कर शारीरिक से बीतवर्ष की
बातें कर सकता है।

दिनभर शारीरिक का मौन भंग करने का प्रयास करता है।
"एक दिन उसका ध्यान आकर्षण करने के लिए खाते-खाते बढ़ के उठा
था "दाल में कंकड है।" शारीरिक घुप़लाप उठी थी दाल का तौंगा
और धाल में परोला दाल की कटौटी उतारकर बुझाने में उल्लास आयो
थी। "फेंक कहूँ दो? खाये । जालो। वह बरबर के उठा था।
शारीरिक ने जवाब नहीं दिया था पर उसके पूरे दाम-घाय से बाँटीर था
कि दाल में कंकड होने का सवाल खेला नहीं होता। कहा उसने खुश
नहीं था, एक बार उसकी तरफ़ देखा भर था, पर वह देखता रहा था
कि आदमी लाब बनाना हुना भूल जाय।" ।

अधिकता के काल्क के जीवन को पिठभन्ना हो खुश और होती
है। वह जिहना सुखदस्तिः दुःख से अधिकता में काम करता है उतना ही
उनकों का उस पर विश्वास बदता जाता है। अतः उसने दुःखतों काम
के अन्ततः नायापयक वाम की भी करवाया है। रविवार सप्ताह में एक दिन
आराम का रिहान होता है किन्तु कार्य पर रखी भी समय काम का संबंध
आता है वह रविवार के दिन पूर्वार उन्हें ध्यान देना चाहता है किन्तु

107

• उर्फ़ सेम : मुख्ता गर्भ : पृ 28
अपने अफसर को नाराज भी नहीं कर पाता। अफसर के बुलाये पर यह दफ्तर बाता है।

कमलेश्वर की कहानी नौकरी पेशा एक ऐसे ही क्लास की जीवन गाथा को दर्शाता है। कहानी का नाम "राधेलाल" है जिन्होंने 2। वर्ष तक अनेक दफ्तरों में एकलीवाली नौकरी की है जिसे तरकारी नौकरी की तलाश नहीं है उनकी दृष्टि में वे रथ को नयी नौकरी के कार्य में नहीं समझे। उनका कहना है नयी नौकरी के लिए दूर में तारीखपेट कर्मी बिगाना पड़ता है, डाक्टरों बाप होते हैं और उनके मुलाकात लाखों के बीच होते हैं जो उनके बस का नाम है।

बाबू राधेलाल की पत्नी, पौत्र के इस तरह को तोड़ प्राइवेट नौकरी करने में रक्षक रहना था और ध्यान न देकर के सिलसिले में अलंबुदं रहते हैं। घर बहुत राशन लाने के लिए भी राधेलाल को भर्ती नहीं होते। उनकी पत्नी, पौत्र द्वारा परिवार की लापरवाही के पिछड़े संघर्ष करते हैं यह कहते हैं कि "तो बाबू न। सातब की गुलामी से पुरस्का दिले हो घर को देखना। हमें तुम इसमें मजा आता है। जब के दफ्तर में बैठ गए सब बा घन्टे से बरी दूध का बदला ने हमारे बारे में बाना रहा है। मेरी बज्जा से दूध नहीं होते तो छाना पका दूध नहीं होता। ।

108

पत्रक का आदमी: कमलेश्वर - पृष्ठ 86.
ढाम्यतय जीवन में परिस्थितियों के संरक्षण से अधिक ध्यान पर्ना पर शक्ति पर देखता है प्रयत्न: वह अपने ही पारिश्रमक के प्रति वह बुद्धि बन जाता है। रवीन्द्र नाथ भट्ट की कहानी "रात के अंधेरे - नन्दे पार्व" में आर्थिक अभ्यास के कारण उत्पन्न नारों संघर्ष को देखा जा सकता है।

कहानी का मुख्य पात्र जिन्हें बुद्धि, प्रति अपने माता-पिता के खड़े हों तो भावभूत थे बोमार मां के प्रति संदेह बाधित है। जिन्हें मां का, मां का प्रति के सत्यार्थ से बिमार रहते हैं। पिलित, मां को बिमारी पर ध्यान नहीं देता। पिलित की लापरवाही से जिसे मां और भी दुःखी होते हैं। वह कहती है "सारी दुनिया काम करते हैं, कौन कहता है क्यों काम न करे? एक दया से बोमार है, हाल तक नहीं पूछा।"

शोघी को लोमा होता है। लीयों से नारों, तुलबद्ध द्वारा शोघण का विकार होता रहता है। पिषीमूर्ति की कहानी "क्यों बाहा सात के नाम पर परित द्वारा नारो सहेल के दिन हृदय पर संघर्ष को दर्शाती है।

कहानी की नामिता शैलनगरी निम्नक्षेप को नारो है। गांव का प्रधान गांव के होते को ठहरता है। गांव की रास तहतियों की आपूर्ति अन्तर्कारियों विवाह के नाम पर बेल्यात है और धन आर्जन करता है।

---
109

रवीन्द्र नाथ भट्ट - पृ. 57
इन बेटों की गई लड़कियों में शिशुएं की पुत्री "श्यामतो" भी झुक है। श्यामतो वास्तव में प्रधान का ही पुत्र है।

श्रीनरेंद्र को जब वाशिष्ठिक होता है नब वह प्रधान से अपने बेटों को हाटाते के लिए डूबते है। वह लोड़के के कभी अनुसार प्रधान के घर के सामने अन्तःन करती है। अमरसंगी श्रीनरेंद्र का रक्षक रूप है। यह गांव के प्रधान स्वयं लोड़के के पाप को जानता है। अमरसंगी प्रधान स्वयं उसके बेटों को पुरुष बनाकर श्रीनरेंद्र से फाँसी दिलाता है। असे में प्रश्निदिन श्रीनरेंद्र प्रधान के दरवाजे को फटाफट लगाता है, प्रधान की पत्नी और बेटा भड़कते होते है। प्रधान की पत्नी, प्रधान से पूछते हैं कि क्या श्रीनरेंद्र का कहना सत्य है। उत्तर में प्रधान कहता है घर की दस्तूरियों उन्होंने पैसों से लाया गयी है। प्रधाननी पीत से सम्बन्धित भगवान क्वं देखते हैं और वह बड़े-बड़े लगाते है प्रधाननी पीत का सिर टूटता है। प्रधाननी पत्नी को सोने के लिए बुलाता है। प्रधाननी पापों पीत का खाध छोड़ता है और कहता है "इ गांव लंका है। छत्ते-लंके देने होगए। रावण दूर हो गए। लिंदर बना है भिमाकन। लोहे दूरों के बरों गांव के सत्याकार होए। होई रहा है। बिहन - बदिया बेटो। हमदूर का शेर हे। स्थान बदतर। साध हे लंका, लेकिन अभ हम ये हैं घरे मां न रहय। आपने बदिया लहरे भीसकरा मागत, मुला .........।"

---

1. काराई बाढ़ - सिद्धविनी - पृ 64-65.
3104* देयर-भागीं संक्षेप :-

नारो विभिन्न स्थो मे, पुराण के विभिन्न स्थों द्वारा गोष्णा का सिकार होती रही है। इसका ज्यादा विषय म्यात्पदन रहन्दो काहारू में मिलता है।

भारतीय नारी समाज द्वारा उपेक्षित रही है। परिवार में उसकी दुनियों विशिष्टता की जाती है। वह धर्म स्वयं सेवा के नाम पर अपनी दुखियां रखाती है। वह दासी का लोभन जोती है। "नारी जाँच सेवा में लगी होती है, उसे धरते है, जो उसकी परिरेखा है, यदि उसे निष्ठुष्ण होना है नारी प्रेय जी मर्द है और तभी वह डीमित है।" 1 किवू व्यायामह रहन्दो काहारू में प्रसिद्ध काहारू राज्य राज्य की गदल ममी जाती है जिसकी नामांक गदल में पेटना है वह गुजरात के पहाड़ों इलाके की मूहष्टा है उस पहाड़ी इलाके का यह नियम होता है कि यव्य विकती भी र्ती के परित का देहात का जाता है तो वह अपने देदर के लाख दूतर सिवाई कर सकते है।

गदल के परित जातना है का देहात होने के बाद उत्तरा देदर "डोंटी" उसे विवाह नहीं करता। गदल अपने पुरूर स्यं व्यवस्थाओं की सेवा में अपना लोक कीना नहीं पाते। वह नये परित "मैनी" के पता चलते जाते है। डोंटी समाज की दिनदा के भाषा से गदल से।

पिवाद नहीं करता। गदल को नये पात्र के पाल बाले देख डॉक्टर चितामा में मर जाता है। डॉक्टर की मृत्यु का समाधान तुम कर जब गदल घर वापस जाते है तो गदल का बड़ा बेटा "निकाल" उसे भीतर जाने से रोकता है। गांव का पूरा गदल से पूरा है कि वह अब क्या कहें आई है? उत्तर में गदल कहता है कि "बह छोटो थी, सब्जे मेंरा देवर बड़ा होता मेरे काम के साथ आया था इतने हाथ देखतो रह गई थी में हो। लोगों द्वारा समर है, इतने छाद छाया में जो हूंसा। बताओं, पूरा यह हो जब, मेरे आदमी के मरने के बाद भी है न रख सकता, तो क्या करती? और, मैं न रखती हो इनसे क्या लुका? दो दिन में कहा उठ गया न? इनको मिटाने में रखते हो क्या होता?" यहाँ गदल द्वारा गोपाल के विन्दु नारी-संघर्ष को देखा जा सकता है।

विनयपुराण सिंह की कानै "धातुल" एक उपयुक्त लिखना ही कानै है। जिसमें देवर द्वारा अन्याय स्वयं शरीक के विचार नारी संघर्ष का प्रत्यक्ष दिखाई है।

कानै की नामिता "मैना" है जिनके पिवाद के लोन-चार मातोने बाद ही पात्र का देखाने हो जाता है। मैना को समुदाय बाले दालो बनाने का प्रयत्न करते हैं किंतु मैना वचन ही हो जिवुद्वा होते के कारण वह ऐसा जोदना नहीं करती। मैना का देवर उसे मैंके लौट बाले के लिए कहता है किंतु यह उसका विरोध करता है। और समुदाय में समान सम्पत्ति का भाग माँगते हैं। वह कहती है कि "मैं निकल जाकर इसमें मेरा इस्तेमाल नहीं है।"

1. स्वातंत्र्यावतर दिनदी कानै कोट : महेश दर्पण - पृ. 58.
2. अन्धुम || समस्त कानै संग्रह भाग-1 || विनयपुराण सिंह - पृ. 16.
3.1.5 लघु - बहु संख्या :-

स्वातन्त्र्योत्सर पहले कहानी में समूनों के अर्थ का अर्थ होते देखा जा सकता है। पुराना प्रश्न समाज में कामयाब पुरुष अपनी वाताना हुए स्वतंत्र के लिए नारी रक्षक के स्वातन्त्र पर नारी भक्ति का स्वातन्त्र वे रहा है। इसका व्यक्त हुआ होता विस्मृति को कहानी "तिरिक्षा चैरर" में देखा जा सकता है। यह कहानी एक निमंत्रण दर्शन की दिनों राजनीति की दर्शनी है। कहानी की नारायण "भिमली" है जिसका सुना उसके माता-पिता परंपरा है। भिमली के पति उसका दुर्ग वाद यथासारा की होती है। भिमली के सी गाय या बकरी की भोजन दुर्गवाहन कर भिमली का झोपड़ा करता है। भिमली की वाते की उम्र से ही इंट के भट्टे पर इंट होता है और अपने बुद्धि माता-पिता के आजोंदिवा का भाग बनता है। भिमली का बाल-पिकाच होता है। किन्तु उसका पति "सिवाराम" झिल्ल यह भी नहीं देख पायी कबरा भाग जाता है भिमली को भट्टे पर लाय करने लोगों का ट्रेक्टर उसे प्रेम करता है, कुंभ का भट्टे का पिता भी भिमली से आगे करना चाहता है, ट्रेक्टर फ्लामेवाला बिल्लर की बदन भिमली से बात का प्रतीत रखते है।

भिमली का लघु "बिस्तराम" समय-समय पर भिमली की बात रखता है। वह गाना का पाया होता है। भिमली को वह गाना लाकर ले जाने के उद्देश्य से बार-बार गाना आता है। और गाना लाकर वह भिमली को ले जाता है। बिस्तराम बहु वो घर ले जाने से पहले अपना वह जोह होने के बाद से बाल लोय करता था परन्तु वह से भिमली को गाना ले जाता है तब से प्रतीतिदिन रात के समय भिमली पर अहंकार करता
है, और वह छोपड़ी के अन्दर लोया करता है। गांध की अर्तूँ बिसराम को गंगा को दूसरे सेंट देखते है। गांध के महत्व बिसराम के छोपड़ी के अन्दर लोने का कारण दुःख है उत्तर में वह कहता है कि वह अपनी वासना की दूसरी पत्र करना चाहता है वह कहता है "दूसरे में लो नया पोलोट्टा जैसा अच्छी पैदात था। रो-रो बर्करे रोना-हम बिचारा आयो। आज थी दोनों हाथी से। लगता था अब ठीक पहली कि तब। तेहेंक बाद में लो दिल्ली बैती कूंकिए। दैनी ही गुरुरी। पीले मार्ग था। यह इतना दिल्ली बैती नीला। सारा मूड, नाग, कान, नाच लिया है। पूरा फेरता परतरा रहा है। जलन। ईट, पलंग दोनों-दोनों को नरेंद्र लोहा डा हो गया है। सहयोग का। तीन दिन में तीन कम कर दिया। दोनों पर लिया कर एता स्थायार रिहा यहाँ पर कि बिसराम उत्तर दूर का रिहा चीटा ते। तब से छाती और सिर में भयानक दर्द।"। । यहाँ हम शारीरिक शोक वर्तन के विवेक नारो के मूल संधर्म को देख सकते है।

3.1.6 भाई-बहन संबंध :-

पारिवारिक समझनों में भाई-बहन को चर्चा महत्वपूर्ण है यह सच्चाई है कि माता-पिता का प्रभाव भाई-बहन पर पड़ता है। नंदन -
वीर यद्योर यद्योर कानी में भाई के लय में पुरुष शीर्ष के विश्व नारो को जागृत होते देखा जा लक्ष्य है।

10. क्षेत्रस्वायत्त बिनदी कहानी केवल भाग - 2, मृणाल दर्पण - पृ ६१४-६१५
परम्परा से चले आ रहे पुर्व द्वारा लत्ता पर पूर्व अधिकार
हिप्ता को इसी लक्ष्य-चार-ताब कहानी में हृदय ने भंग करने का प्रयत्न
हिप्ता है नारों भी पुर्व के समान वासन पर समान अधिकार रखती है इतना
उद्देश्य को लेकर यह कहानी चलती है। कहानी के पात्र शरीरजल एवं
अनोका वेद में दोनों बारागर बनना चाहते हैं शरीरजल अनोका को कहार
बनने के लिए कहता है। वह स्वयं पूर्व होने के लिए नहीं पाता और
बारागर बनना चाहता है। किन्तु अनोका खोजकर नहीं करता जब
वह कहता है कि बारागर बनेंगे, शरीरजल यह बुन कर अनोका को हंसी
उठाता है वह कहता है कि ”शुभ। वह बिच्छा से हंस दिया ”लड़को
होकर बादगाह बनोगे । " यह सुनकर अनोखा शरीरिल का विरोध करती है । वह कहते हैं कि " क्यों नहीं बन सकते । बादगाह लड़के के लिए फिरहै क्या ॥ "। इस कहानी में यहाँ समान अधिकार प्राप्त के लिए बनने द्वारा भागी के विस्तृत संघर्ष व्यक्त हुआ है ।

3017 पुत्र-माता का संघर्ष :-

व्याख्यातार हिन्दी कहानी में यह एक पुरानी दोनों पोळौं के बीच संघर्ष का विषय मिलता है । लद्दार नहीं पोळौं पुरानी पोळौं द्वारा आगे वाद दृश्यदेशीय है माता-पिता संलग्न का पालन-पोषण कर उन्हें अपने वैश्वी लगी बढ़ा करते है पिता भी संलग्न को आग्न सम्पर्क के अंतर्गत में आत्महत्या रहते हैं । दोस्त भाईतिक दो कहानी " सलाह पर । " में इसी कारण को दर्शाया गया है । इस कहानी की नातिकल हृदयत्रा के पुत्र सम्पर्क पर अधिकार की मांग के लिए संघर्ष करते हैं । घर में माता-पिता एवं पुत्रों के बीच संघर्ष बना रहता है । हृदयत्रा घड़ी भरे माता-पिता का विषय होता है । हृदयत्रा का पुत्र डिशन कहता है रक्षे अज शाम तक सम्पर्क का बाणारा वादित्र के एक के खाना, खाना छोड़ देगा । हृदयत्रा कहता है " तो छोड़ दे, हमारा खून तो पी दी रहा है ।"2 यह पुत्रों द्वारा अत्याचार के विस्तृत नारी संघर्ष को देखा व लक्ष्य है ।

1. कामरेड का भोज - हुमा - पृ. 77.
2. सलाह पर - दो पोल खण्डित - पृ. 139.
पोता-दादी संबंध

मुढळा गर्ग की कहानी “ बैल पता ” एक मुढळा नारी की कहानी को लेकर चलती है जिसका एक पुत्र और एक पोता है। कहानी की नामितक “दादी” की जमीन, पायदान है यह नारी स्वारीभानी है। पोता दादी के अलावा उसके साथ तकनी है और दादी को परिवार पर अधिकार दे देते देख दादी पर व्यंग्य करता है किन्तु दादी अपने लाखों का बीड़ छोटे को करने के लिए संहार करती है। वह अपने ही बच्चों में होंगे बनता का लालच कर उसे बुलाता है। “खास वन की ओर पर अपने तरह बिलाकर उन्होंने उसे दूरकर देख और बोला “अरे तो रिलेस है, हृद्म चलना अपनी बीड़ के पर हम तो अपनी मन की करते है खुद मुखतार है, खुद मुखतार। तीस बरस हो गये ⋮⋯⋯⋯।” हार्दिक में वही खास वन के से दूरकर उन्होंने दूर फेंक दिया। वह ठीक-ठाक जाकर बेड़ा मालिक के पास जाकर गिरने “कभी करते है माँगा।” वह बोर से झोंकी, लग जाती तो गू।

वह रिलेस कर दंड पड़ते। “ठीक कर दिया ख़प्पर – करात्रे की।” ।
3.2 पुरुष तत्त्व, शाक्ति और श्रेष्ठ के पिल्हु सारी संध्या 

हामारजिक संदर्भ :-

जैता रंग पूर्व निरीक्षित किया का पुकार है उनके परिवार के ही हो 
तीमित दाते में चलने वाली शक्ति और श्रेष्ट की प्राणिया हो सामाजिक 
प्रोफेशन में गायक ध्वनि और दीक्षान्वयन व्यापार करती है। 
स्त्री-पुरुष के समान भी में निवासी या निवासी मुआ-मुआ 
का आयाम हो या 
कार्यालय में बांस बनकर या देख त्यार में छापक बन कर भागे रिकी भी 
स्त्री में पुरुष स्त्री के जीवन में शक्ति और श्रेष्ट की नोट्स से अंतरित हो, 
स्त्री का संध्या अपने प्रति हस अन्वय के विरोध में अन्वय हो बाता है 
इसे दूर छुए से प्रक्षेपण जहां को अगे बढ़ाया गया है। 

3.2.1 प्रेमी-प्रेमिका संघर्ष :-

स्वयं-चरित्र हिन्दी कहानी में नकारात्मक संघर्ष का भी पिक्र च 
मिलाए है। आपने प्रेमी के प्रति आससत्वी होता है। 

निर्मल वर्ण की कहानी " अन्तर " नकारात्मक नूक संघर्ष को 
कहलाता है। कहानी का नायिक प्राण-वात है कॉस्टल की आवता है। 
नायिका के गम्भीर होने की चफ झुकबर नायिक, नायिका के आश्वासन कराने की रात्रि देता है। किन्तु नायिका बलवूर्धक इंधन के पिल्हु अक्षरित करता है। " अंतर बच्चा पैदा करने की महीन के दिन है कि कथा,
क्या पाई पड़ता है, फिर वेट रह जाएगा हरसज़ या पाइथी बार।
अत्यधिक में नायक, नायिका तथा हरसज़ के मिलने आता है और छाँड़े के लिए कुछ सामान लाता है जिसे नायिका उसके बाद फेंक देती है “कुछ देर तक यह पलांग पर अंधे मौने रही जब उसे निकाल हो गया फिर यह अवसर तो दूर ना चुका है, तो वह दोगे से उठा छोड़के खीर दें।
बाहर ओरे में उस छोटे से बाहर की बाटियों की जमानत रही थी। उसे प्राण में अपने होस्त का कमरा याद कर आया। सिर्फ दो दिन पहले उसे छोड़कर आई थी। लेकिन उसे लग रहा था, जैसे बाहर से एक लम्बी मुद्रदत्त जोड़ गई है। यह कुछ देर तक यह पलांग रही रही। मेटॉनिनी वार्ड से रिसो बच्चे के उत्तराणः को आयाज हुनाई दो थी, फिर तब खामोश हो गया।

उस पुस्तक बिस्कार के बाहर पलटी आई। अपने हूटेक्स से एक पुस्तक तारिलय निकाला। फिर उसमें बढ़ोत्तर उसने उन सब शोरों को लैंडरा, जो वह उसके लिए छोड़ गया था। छोरों के पास आकर उसने उन बाहर ओरे में फंसा दिया।

जब वह वापस अपने बिस्कार के पास आई, तो उसका लागू चीज़ बनाने लगा। बुला पर होपा का पावेट आए भी पड़ा था। उसने एक रिसोल हुल्लार का लिए उसका खाद्य फिर अधोल ता लगा। उसे खाना पर बुखार कर वह पलांग पर लेट गई। एक छोटा-सा गरम आँख़ उसकी आंखों
को कोरो से बहता हुआ उसके बालों में लो गया, किन्तु पत्थर नहीं फूला।
वह आराम से लो रहा था। 1

निन्यमा सेवलो की कहानी "शुरू हो और त्योहारीत" में शिल्प के विस्तृत नारी संग्रह का प्रथम हुआ है। कहानी की नामिका "शिल्प" अधिनाय ते ग्रह करती है। अधिनाय के ब्यौरे में कई श्रीमताओं आयी हैं किन्तु वह उन संस्कृतियों का अपने साधन हिस्से इस्तेमाल करता है उनमें शिल्पी भी एवं श्रीमता है। शिल्पी के साथ वह वह ग्रह का नए रचना है और वेद हेतु अन्य फूलों के साथ विदाह बना पाहता है जिसका शिल्पी विरोध करता है वह बाध्य नहीं अधिनाय को बहुत करती है और करते हैं कि "हमारे देह बड़ी अभिन्नता लग रही थी।"

क …… क ……. क्या?" सप, जब हुम तिरंगा छूट था हो भाले फूलीये के नीचे जा रहे थे न, लो वह जानवर बड़ी गंदे लगे। हमारे पालक का चोट नागे बिल्लियों के भीतर ……
हो ……. मैंने खुद को बड़ा गंदा मनसूल किया ……"

"शि ……… शिल्प" निन्यमा सेवलो की कहानी का सांबाजित ग्रहन नई रचना एवं आयी है। वह हमारे कहानी के प्रमुख विषयों को भी देखती है।

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - निन्यमा दर्शन - पृ - 114-115
बहुपरित्नक पिताहार नर्स के लिए एक प्रकार से मानसिक शोक होता है। पिताहार पृथिवी का परब्रह्म होता है चित्ता दुष्कल की बहानी "केंद्र" की नायिका कमल निमंत्रण करते हैं। उसका प्रेम नन्द का बम्बई में मृत्यु होता है। नन्द दिवालित है और उसके पास क्षण है वह अपने परिवार में बच्चों के गांव में रहता है। इस स्थान को क्षण कमल से दिखाया खाता है और कमल के सम्प्रदाय दिवाल का प्रसाद रखता है। नन्द के परिवार के सम्बन्ध में कमल को नन्द के देशात्मक के बाद वानकारियों में रुकता है ताकि कमल का प्रेम सम्बन्ध सरे बोधिसत्त्व नदी होता है।

कमल को पृथिवी सर्ना जब सणानी होती है और लेकर रोट्स के स्वभाव वह लोगों के लिए उपयोगी होता है। यहाँ सर्ना का प्रेम बढ़ते बच्चों के लिए कामयाब होता है। कामयाब भी गांव का रहने वाला है। और वह सर्ना से दिखाया दिखाया होता है। कमल को नन्द के प्रेम का नाटक अभाव का मारता है। किन्तु तथ्यात्मक रूप से चित्ता को लेकर वह अपनी पृथिवी की धारा तय करते हैं। उनकी रस्सी को नियंत्रण चलाए के अन्दर बुलाते हैं। "आदनक कथा को बनाय को उल्लोचक लिया।" पृथिवी शाह के रक्षकों को बहुत सोचती है। "बच लो, चल लो! बनाया है तो बलिदों बना है।" देर का तीन है? पड़ा है? यह पृथिवी नहीं हो जाता है। हैरान हो रहे हैं। यह पृथिवी के लिए है। देर नहीं मंगल है।" भीष्म हो रहे हैं। काफी मुदाक को बनाया गया है। दापतक नहीं आकर लूं।" मेघा होगी। का सत्त्र ही को "..."।
दाम्पत्र जीवन में प्रेमिका से सम्बन्ध छैनेवाला यथार्थ अपनी
प्रेमिका संग परदे से तीन तरह से न्याय नहीं कर पाता। यद्यदि वह
परदे से न्याय करना चाहता है तो प्रेमिका को अल्पसुक्त पराता है और
प्रेमिका से न्याय करता है तो परदे को अल्पसुक्त।

प्रेमिका अपने प्रेम के खारिज जीवन में रचाय करता है "प्रेम का
अर्थ नारी के लिए से लो, पृथ्वी के लिए मेला प्रेम का अर्थ नारी के लिए
लाभ है, समर्पण है, रचाय है कार्य है उद्देशक पृथ्वी के लिए ग्राहण है मात्र ग्राहण
hै और ग्राहण है।" ।

भीम साहनी की कहानी "होरे " प्रेम पर अधिकार प्राप्त
के लिए नारी संघर्ष को गरीबी है। कहानी का नायक गिरीश को
परने "गुफ्तको " है परन्तु उसका अर्थ ने प्रेम सम्बन्ध है अर्थना काम -
कार भी है और गुफ्तको शृंगार है। अर्थना के दक्षर में साथी महिलाएं
अर्थना के प्रेम सम्बन्ध पर बंधन करते है अर्थना गिरीश पर पूर्ण अधिकार
स्थापित करता चाहता है गिरीश के बैठे छोटी बिठ्ठ के जन्म दिन पर गिरीश
के वस्त्र लौटना पाता है यहीलिए वह अर्थना से कहता है कि रेखाणी
में अधिक समय बिताने के लिए उससे पास बचा नहीं है परन्तु अर्थना गिरीश
की प्रतिबन्ध करते है वह कहता है "मैं आती हूं हम यह कहोगे में,
मैं जानते हूं हम भी नहीं हो। मेरे धर्म को भी नहीं सकते। पर
का मैं हमदेखिए तक भी नहीं सकते। क्या हम दो घोट एक साथ बैठ
भी नहीं सकते। हम बार-बार मुझे कहने लगते है रिक मेरा बधन अभी
तक नहीं गया मैं स्फ़ित की नहीं साज़िश। ..... " ।

1. "होरे " - नवंबर - दिसंबर 1994 - नारी उल्लास वधा -
कुल क्लास नोटस - गौतम साहन्याल - पृ. 223
2. पद्माय - भीम साहनी - पृ. 168
त्यासन्योगसार हिंदी कहानी में रघुरामचा की "गदल" कहानी बहुपरिवर्त कहानी मानी जाती है। कहानिकार ने कहानी की नायिका गदल के उदार पीरत्र द्वारा नारी की स्वतंत्रता को दर्शाया है। गदल को अपने अंतर्गत स्वतंत्रता को पहचानने व गुजरात के पहाड़ी हिलों की खाओं गुलाब जाति की महिला है उस पहाड़ी हिलों का नियम वह होता है कि यवं किसी स्त्री के पोत की मृत्यु हो जाती है तो वह अपने देवर से दुसरा पितामह कर सकता है। गदल की उम्र 45 वर्ष है विस्ते पात्र हुन्ना वा के के दो पुत्र स्वयं दो पुत्रांनां है। चारो पिकारीहर संतन कार है।

पति की मृत्यु के बाद गदल अपने देवर से शादी करना पाता है। गदल का देवर "डॉकी" पपास साह का लम्बत कराने गुजर है उसके पति के संतान की मृत्यु हो जाती है उसका अपना बेटों नहीं है वह गदल के घर में ही क्षात्रा और रहता है और गदल के बेटों को अपने बेटे समझता है।

डॉकी गदल से प्रेम करता है उसका प्रेम आत्मीय प्रेम है। वह समाज की रिनमां स्वयं भी के वारस गदल से पिकारत नहीं कर पाता। गदल भी ऐसे पुरुष के प्रेम को खोज में रहती है जो उसे अपना समझे अर्थ है उसे भी आत्मीय प्रेम की खोज है। गदल विकास है। परन्तु वह परिवार के मोह में बंध कर बेटे, बहूं की गुलामी करना नहीं पाता वह बल्लोस वर्षाय पौंड के पास पली जाती है। उसके बेटे उसे पकड़ लेते हैं देवर गदल से पूछता है कि दू से गई है न? तब गदल कहती है "अब मेरा यहाँ कौन है मेरा मरद हो मर गया। लौट-जो मोन उसकी पाटरहो की,
उसके नारे उसके लिए अपनों को पाकरे बनाई। पर कब मातिक हो न रहा, तो कौने को दहलाम उतारूँ? यह तड़के यह बहुर। मैं हमने गुलामो नहीं कही।”

यहाँ हम गधा पीरत्र द्वारा आत्मोत्सव की खोज पघ शोकन के विश्व नायों संघर्ष को देख सकते है।

नायों में सहजीक अंधक नहीं है किन्तु जब यह सहजीक माना पार करती है तो यह संघर्ष करना आरम्भ करता है। कृपण अग्निकोट्री को कहाँ “विल्हला” की नामित “संगोता” घर में बड़ी मेटी है। माँ के देशान्त के बाद घर का दर्शिता उठो के कर्मों पर होता है। छोटे भाई संग बढ़ने के वह पाते हैं और अपनी पढ़ाई भी बारी रखते है।

पिता को मृत्यु के बाद पीरवार को बोझ और अनधव्यता बढ़ने के कारण संगोता विश्वासन पिन्हार में नाकरो करने लगता है। यहाँ कटानी का पात्र कुशन से उसकी मिस्का होता है कुशन, संगोता को जोड़न भर साथ देने का वचन देता है परन्तु खुशन को अपने विदालित छोटी बढ़ने के साथ प्रेम सम्बन्ध लोगित करते देख संगोता कुशन का विरोध करते है यह कहते है—

“शायद भी अपना पर छोड़ देती है ...... पर हुम इस घर में अभाविता पैता रहे हो। यह एक साथ देनों पर हो। कोई पुर्व नहीं है इस घर में हो का इत लब हुम हारा शोधक करोगे।”

2. रचना अग्निकोट्री – कृपण अग्निकोट्री – पृ. 510.
पारिवारिक संस्कारों द्वारा व्यक्ति संपत्ति सीखता है।
सम्म गृह संस्कारों द्वारा ही मनुष्य में आते हैं। राजेन्द्र यादव की कहानी "टूटना" में कहानी का नायक पिला र का सम्भावना अनोखा होता है और यह आम्य द्वारा करता है। जिसे पिला कहानी का नायिका बेहद होता है कहानी का नायिका पिलार की प्रेमधर्म है जिसका नाम "लोना" है। लोना को पिलार के सम्भावला से नफरत होती है यह पिलार को सम्य बनाने के प्रयत्न से उसकी क्षमयों पर ध्यान दिया करता है किन्तु पिलार के अर्थ को रेस पहुँचता है। उसमें इन्फोर्यूरियलडी काम्पाक्स की भावना जागृत होते हैं वह लोना पर फूलित होता है जिसका लोना विरोध करता है "लोना का स्वर फिर गया। यह न पौछी न पिलार। बहुत खतः आयाम में बोली, "देखो पिलार, आज से बंगाल इसी श्रीमान लोग साधना नहीं रहता। मैं भी लोग रहो भी कि अब हम से बात कर हो लो जाओ। न छूटे उन्हें हो, न बहरे। हमें इन्फोर्यूरियलडी काम्पाक्स के मारे हुए को इसीलिए हमें मेरे द्वारा बात वह नहीं लगती, जो होता है। उसके पीछे और बातें दीखती है। मैं तमाखी थी कि मैं नैन, बातकोट, उड़ते-ढोले के तार-करों और डालंडर की तरह है जिन्हें बहुत लंबी बात मारा जा सकता है लेकिन इस काम्पाक्स का कोई इलाज की नहीं है। हमें मेरे द्वारा है ढूंढ-ढूंढ़ने फलने, सबको है भी और दिखाया लगता है।"

1. टूटना और अन्य कहानियाँ - राजेन्द्र यादव - पप्पी 155-156.
3.2.20  देव-विभूति स्तंभ शोभण के सार पर :–

समाज द्वारा उपेक्षित नारो भी सारभानो होते हैं भन की लालसा मनुष्य को दु:ख बना देती है। स्त्री देवयानी अर्थिक विकास के कारण अपनाती है।

भीम ताहनी की कहानी "अभी तो मैं - ज्यान हूँ" देवयानों को दिनपथ साध परिक्षा द्वारा अपावन के विश्लेष लंघन को कराती है। इस कहानी में एक देवाना पर एक सरदार ग्राहक बीस मर्यादा की घोषणा का इलाम लगाता है। देवयाना इस इलाम को अस्तित्वात्मक करती है ग्राहक के देवयाना की लालसा हेतु चावल है। देवयाना लालसा ढूँढ़ने से हरकार करती है। ग्राहक पुलिस में रिपोर्ट करने की धमकी देता है और देवया को नगर होकर लालसा ढूँढ़ने के लिए ब्याह है देवया इस अवसर के विश्लेष बढ़ाती है। रंगी अभी भी लागर पर हाथ रखे सरदारावरी की ओर घूरे जा रही थी। इस पर दीलोज पर घड़ी उत्तरी हमस्सैदन बिफ़र उठो- निकलो यहाँ से दादोजार - बड़े लालसा हेतु आये। कौन लालसा लालसा मैं भी मुहरा? जा बुला लो पुलिस को पुलिस के बाप को भी बुला ला।

हमस्सैदनी की अभी छाती भीड़ लग गयी थी। सरदार को फिरवास कह गया था कि रंगी ने उसके डो नोट छालियों के बीच पिया रखा है।

- मैं उसके कम़ेड़ उड़ाना। मैं पुलिस बुलाऊँगा।
है, दातादीय, बड़े उत्सवों में से नहीं आते।
वा, बुलता तो पुलत वाले को बता, देखता का है।" देवस्य ग्राहक
को "देखा" पर अथवा पर नाम प्रेट के अलावा हुकुमने के समय देती है।
उसके बाद वह अपनी इज्जत बनाये रखती है।

3.2.3 सामन्ति परिवेश : शोषण का दायरा :--

खात-खोरत हिंदी कहानी में सामन्ति परिवेश परिलक्षित होता है।
दायावर जोवन में पीत-पंत का साधरुण दूसरे के लिए
अनिवार्य होता है। सामन्ति परिवेश में ग्राहण मानव परिवार से
पदार्थों होने का प्रयत्न करता है।

संकीर्ण की कहानी "जली बहु " में कहानी का नायक बली
सामन्ति शोषण से पिघला होकर अपनी पत्नी को गांव में छोड़ कर ब्राह्मण
बचा बताता है। उस गांव में नवीनिति नारी एक वर्ष बाद गांव का
सिलस्तोत्रिक के शोषण का विषय को होता है। जली की ब्राह्मण जाने के बाद
लोहे खबर नहीं मिलती उसके एक पृथु से। जोसी को बहु-जली का इन्सेजन
करती है। गांव के लोग जली-बहु के बैठे में अकारण ही पत्नी छोड़ते है
उस गांव दालो को बाहरलों को सवार है। जली-बहु आर्थिक अभाव के
कारण एक दिन आम के बाजार आम चुराये खक्की जाती है। और उसी समय
सिलस्तोत्र बहु-जली को देखता है। इस अवसर का लाभ उठाने सिलस्तो
बहु जली बहु को अपनी वासना का विषय बनाता है। जली बहु गर्भ --

10 टीर्थां -  भीम साहनी - पृ 106.
प्रातः यहाँ है श्याम लगाता है और अपनी बहु के शीशा को खबर तुलनामा पिण्डण पर नाचकर होता है। गायक का फणियान स्वरूप पिण्डण शीशा जली को अपनी गहरी चर्म को खो लाकर गे हर दिन की निवारण करते हैं जहाँ जली बहु जली का पिण्डण करते हैं —

"उसने हाथ खटखट दिया, जोन भंतार की देखी जे सोटाया गया रहे, भंतार मोह गा रे, हत मोहा हाथ भित्र देखे-देखे हो उसने सिंघुर पोष हा गुड़ा घूंघरपाया लोड़ हो और बुझली को फिसक कर हिलाया करने जल्दी।"  

"जली बहु साहिन माह में सबसे को स्वरूप देती है जली बहु जली को दूसरी बहु लाकर देख।" इसी बीच एक दिन वह दूर से देखी जली को एक नया और साहिन तारा अपने साथ आते हुए। एक वजरस्त हुक एताने उसी पिर भित्र क्षेत्रो- 

बल्कि करने से उसने बुझली को बम में बनाये, बम के बदले में जली को उत्ताप, तेल की तालाब को उसके रिलाय पर ध्वनियार हुए काराटो लेकर निकल पड़े। गायक के लोगों ने देखा, हुआ नासर भरे दोपड़े की अर्थ एवं जली बहु ना रहा था, शर्म के स्तरने पन की तरह एक जली बहु ना रहा था।"  

"अल: इतने कहानी में साध्यता परिणाम में नारी शीशा श्रीमक्षण के शीशा के प्रति कहने में देखा जा सकता है। " नारी साध्यता का उपयोग है, नारी मध्यस्त का उपयोग है।"  

1. आप यहाँ है — संतोष — पृ. 16.  
2. — देखो — पृ. 16-17  
3. "हेंस" नवम्बर-दिसंबर 1994: नारी उत्तर कथा:  
कु छ क्लास नोट्स : गौतम सान्याल — पृ. 223.
3.2.4.- पूजोवादी परिवेश : शोकन का कुल दायरा :-

स्वाभाविक हिंदी कहानी में पूजोवादी परिवेश में नारी संघर्ष का विचरण मिलता है। औपचारिक कारण द्वारा सामान्य परिवेश पूजोवाद में परिवर्तन हुआ। पूजोवादियों द्वारा श्रमिक निर्माण श्रीमती होते रहे हैं।

संजय की कहानी "ध्युष को टैंकर " में भोजपुर में आतरुक कम्पनी के श्रीमतों द्वारा मजदूरों को परमाणु जंक्शन अखंडताली शान्ति में को मांग करते कम्पनी के विशेष संघर्ष को दर्शाया गया है। कम्पनी के उद्योग, मजदूरों का शोकन करते हैं कहानी का नाम "हूसलो। " अंग्रेज अन्यथा वर सम्पूर्ण रूपसे मजदूरों का प्रशिक्षण प्रदान करती है और कम्पनी के मुख्य द्वारा शान्तिपूर्वक शोषण के विश्वास भी संघर्ष करती है।

हूसलो को उद्योग करते देख तेलेफोन का मुख्य तेलेफोनरी का पक्ष लेकर घुसलो को नहीं पर नहीं देख नेट के अंदर प्रवेश करता है। हूसलो मुख्यों को देखकर अपने पीत इम्मन के पास टेलीफोन में चला जाता है।

इम्मन को सारे देख मुँहों का बड़हाल है "सतला भूमिका। सपनारे हो मर गया ......।" दूसरे कोने में देख के स्वाद में बड़े मुँहों की आवाज गाती की हंसी रीढ़ में तरसराती है। हूसलो ने अपना सारा बदन बदन देने का लगता है जिस पर मुँहों के लिए रहे रहा होता है।

"छोटे हमारे क्यों हैं " मुक्त होने के लिए लागताले है हूसलो।
"कामे, ओवर टाइम हीला लगता है का २ मूंगी हर संभव कोशिश करता है। हुरसतो को पहला करने का।"

3.2.5. नागरिक अधिकार प्राप्ति के लिए नारो-संघर्ष :

उच्च वर्ग द्वारों की समस्या को समाधी के स्थान पर स्वयं प्रभावित बनाए रखने पर अधिक ध्यान देता है।

भीष्म साहनों को कानो "पिन्दिनक" निम्नकार्याथ नारो के नागरिक अधिकार प्राप्ति के लिए संघर्ष को पहला करता है। कानो को नायलक "गौरी" है। वह एक मूलतेर मे पाटें के घरों में शान्त हर्षन का काम करती है और परिवार का प्रेम करती है। गौरी के लोग छोटे बच्चे स्थान एक छोटा भाई है। चारों बच्चों के काम के घरों में नहीं है वा पाता। इसीलिए उन्हें वह मूलतेर मे बूढ़ी बाली मे छोटा गाला है।

सबसे छोटा बच्चा एक बाली के बादर रह तक नहीं आ पाता जब तक कि वह काम के रिंड़े नहीं आतो। किन्तु वहमाल गौरी के बच्चों से नाराज होते है। और नारी भी बच्चे रहते हैं। गौरी अपने छोटे बच्चे के लिए छाट लाती है जिले के वह उस पर पड़ा रहे। गौरे छाट सड़क से ठोड़ा हटाया || बलोल साहब के घर के सामने डालते हैं और बच्चे को उस पर लिटाती है। वनोल साहब गौरी को देख कर भी अनदेखे ते रहते हैं और उनकी पत्नी छाट को सड़क के पार रख आती है। गौरी समय

1. आप यहां है - संगीत - पृ. 24.
"हम यहाँ से हट जाओ, किसी दूसरी कमत बाकी रहो।"

"का जाओ बबी, आप ही बताओ। मैं तो आप खाट उठा लाओ थौं खाट पर बच्चा पड़ा रहेश, पर बबी, आपने तो खाट ही घोपक हटा दो।"

"यह बाॅर्नियो घर है, किसी दूसरे के घर के सामने जा बैठो।"

"यह बगल सड़क से धोइड़ा हटकर है, बबी, 'म नहीं, मैं नहीं दिया, अर्थ मन आये इन्हें से जाओ। मैं तो हमें यहाँ नहीं बैठने हैं।"

"हम अब बैठते है तो आपका क्या है। ' गौरी ने भी हुनकर केवल उतरा पीठ फिर से पोला पहले लगा था और वह बिपतने लगे थे।"

"घर गंदा होता है। हमारे बच्चे कम-कम से कमरा उठाकर यहाँ फंक जाते है। और गौरी होता है अभी-अभी तेरे बच्चे पिल्ला रहें दें।"
अगर गन्दा झालेंगे तोम में साफ करके लाएंगे, खोखो जो।

नहीं मेरे साथ भला नहीं करते खिली दूसरे घर के सामने खाकर बैठो। हमने हमारा तेज़ा नहीं से रखा है। बल, मैंने कह दिया। हम यहाँ से उठ जाओ।

"वहों उठ लाये जा आपका का लेते हैं? " हमारा घर गन्दा होता है। "यह आपका घर नहीं है। यह तड़क है।"

2.6. नारी धोप : सामंतवाद और पैशोवाद का गठ बंधन :-

स्वास्थ्यावल भारतीयों ने आजादी के लिए संघर्ष जित उद्घाटन को ले कर दिया उत्सव बांध दिखाया हुआ लेख विध्वंसित करते है। "स्वास्थ्यावल के लिए संघर्ष करने समय हमारा सजन था, राम राज्य और राज्य या हमारे अपने लोगों का हमारे लायकीम हरित संघात। सार्थक हरित संघात के रथ पर सारी करते हुए आम तक हम उत्तराहर्ष सजन के जिनके वहाँ है। लेख भी जब हम शानदार हो अपने लिये इस ईमानदार की कस्टों पर बढ़े हैं तो हमें हम जैसा विकल्प रेखा का एक दिखावा नहीं पड़ता, हमें अंतर्द्वंद्व नहीं होता है। महानगरों की गणन अनुमोदक पृथक प्रविधान के राष्ट्र का दाया करती है। सारी योजनाएँ एक ऐसा अनावश्यक आदर्श-तो बदलता है जो लायक के।
पत्र के महत्व-पूर्ण आधार लिए विभिन्न भी पत्र बड़े जाने को लेते हैं। लेखाप के भक्षण का अत्यधिक यह है कि आज को राजनीतिक और सामाजिक प्रश्नों (System) के पूर्वार्ध तक उत्तर दी जा रही है। इन दोपहर के पुलवर्ती राज्य का उद्देश्य बताती है जिसके समायं में अपने महत्वपूर्णों के शिक्षा के पूर्व रूप पर भूमिक्षण है बताती है जो नारी को इस खेल में गोट बनाना है। इसका यह सीधांत विद्यमान को बता दिए गए हैं। क्या यह भाव है कहने में विद्यमान के अन्तर्दृष्टि आदर्श विवाह का नाटक गांध का प्रश्न रहता है। गांध में निम्नकर्म का क्षेत्र उनकी बेटियों को बताता है और धर्म आर्यता करता है। पुरूष वास्तविक जीवन का समांत, नारी प्रतिष्ठा है, नारो अत्यंत है, नारी का क्षण है जिसे धार का दावा है।

2. गांध का लोकार्थ के गांध में प्राधिकृतों शूल का अत्यंत अव्यापक है उल्लंघन, प्रश्न धन का भागोदार नहीं बनाता। इस अंतर से लाभोद्विपत्ति होने जो अपने जन्म के प्रदर्शन के लिए पुनाने के बीच मात्र पूर्व गांध के लोगों में आदर्श-विवाह के वास्तविक रूप का प्रपाद करता है। शीनपरी को प्रश्न उल्लेख के रूप में एक मात्र गोट बनाता है और उसे अनमोल कराता है।

शीनपरी वास्तव में अपनी बेटी "स्मार्ती" को दायाँ फर्ने के चर्चा प्रश्न के घर के सामने अनन्तार्य करती है। लों प्रश्नान्तर गांध में आदर्श विवाह का आध्यात्मिक विवाह तीन-बार महीनों के अनुसार तक।

1. क्षरी बड़ा : विश्वसूति - पृ 15
2. "हसन" नवम्बर - दिसंबर 1994 - नारी उत्तर कथा : कुल क्षर सोट्ट संस्कृत सांस्कृत - पृ 223.
गांव में देवता की तरह पूजा लाने होने ये उनकी का अध्ययन तक से निकलना मुश्किल हो गया है। निकलने की जीनपरी उनका पैर पड़कर मोहतार बलाते हैं।
"मोर बिदित्याव वापस कर दे बेद्धगान्त का, मोर फूल ऐसी बिदित्याव गाय-
बकरी की नाई बैलियों के रिद्वों से मरात्मे। लोरे दूर-दूर से कोई फूल के
बदर-बदर पुर्के रे कोई तृत्या ⋅ ⋅ ⋅ ⋅ ⋅। यहाँ हम साम्बाराड और हृदयावाद के
चलन्ध्य द्वारा अन्याय तथा दग्धागारों के विस्कु नारी संघर्ष को देख सकते हैं।

आज तक यिस्त्यों अथवा पूर्ण में औरत को समझने की उम्मीद नहीं
रही है। इसका कारण पुरुष, स्त्री के नियमों को रूप दिया है और लोहदा भी है।
बाह-विवाह नारी जाति के लिए अभिव्यक्त है।

शिश्नत्रांहो का नामी "शिरियॊ-परित्वर " में कहानीकार ने
पुरुष द्वारा स्त्री पर रित्र जाने वाले अन्याय तथा अत्याचार के विस्कु नारी
संघर्ष को दर्शाया है। जो पुरुष रोधों के बीचन से स्त्रियावाद करता है उसका
पक्ष पर योग्य संवृत्ति गांव का पुरुष समाज होता है और स्त्री को गाय या बकरी
की भीति सब्जा देता है।

कहानी की नापित्या पिमालो को चित्रारम अपनी धार्मिक वास्तव का चितार
बनाता है। उसका युगल कल्पना भी जाता है शिखर का अहा का अपने घर ले जाता है और श्रमितितिया पिमालों के दूर-दूर आयवाह करता है पिमालो
उसका निरोध करती है। बहु को अपने ध्याय में न आते देख चित्रारम भेदान का
तीरथ स्थः प्रताद के रूप में पानी में अभिम तथा प्रताद में गांजा मिलता कर
पिमली से बनता है रिं यह भावना का परणाम मृत्यु स्थः प्रताद है। पिमली
बिस्राम की दुःखदा क्योंकि नहीं समझते वह रिं:ल्वमज रूप से पंजोरी खारी
है और परणाम मृत्यु पीली है। उसे नागा चढ़ जाती है। और वह जलद्या
पर लुढ़क जाते है। बिस्राम भुः का खलासार्क रहता है।

पिमली को जब होगा आता है। वह अपने सहुल को आमाजोयता
से दुःखी होती है। और अपने पाँव की खोल में बलकररा निकल पड़ता है।
बिस्राम धर लॉट कर अपने दुर्लभकार को रिप्शने पिमली पर चोरो का
इलाम लगाता है। पिमली को गांजा वाले ही लो लेवर से पक्का कर लाते
है और बिस्राम की झोपड़ी के सामने पंगाज्या विलाप है। पिमली पर
एक और आरोप परपुर्य से प्रेम सम्बन्ध का लगाता है। पंप द्वारा इतनी
का पिमली को दागने की हुनादी गाता है। पंप के अन्याय बन्द अत्याचार
फैसले के पिंड़ि पिमली आजार उठाते है। वह कहते है कि "मूर्ख पंप का
फैसला मुंहर नहीं पंप अन्य है पंप बहरा है, पंप में भावना का सत नहीं है।
मैं ऐसे फैसले पर धुशरी है अल-अह्ला े देखूँ दोन माई का
लाल दगनो दागता है।"
3.2.7 - नारो-संघर्ष कानून और व्यवस्था के संध्ब में :-

कानून के मात्र कान होते है भ्रमण की उत्तरक लिए सफाई होती है।
क्लेशवर को कहने "ब्याह " परिपूर्ल में की जयन्त के सम्बन्ध में कहने है।
कहानी वा नायक की कहानी में पात है वह अपने नौकरों के गुना लने
की कुंपता से आर्थिक का लेता है कानून आर्थिक की सफाई के भ्रमण
हटाये करने मुरख को परन्तु श्याम चालाको से लेतो है जिस चालाको के
विश्व सुख की परन्तु संग्रह करते है।

पीत पोटोग्राफर, प्रेम इन्फ्रा भेकन बूटो, वर्करों पिंडिका,
व्यापार कम्पनी आई में पोटोग्राफर का काम करता था। उसने विलो
राजनीतिक मन्त्री के ब्याह के विश्व गलता से पोटो अस्थायी में गलता
है जिज्ञासा विश्वासवादी होता है और उसे नौकरों ते पिमास दिया गाता
है। नौकरों दूसरे के बाद उसे दोहर में अफसर हो डायल होती है जिज्ञासा
वि और भी कुछल होकर आर्थिक का लेता है। कानून जब उसका
आर्थिक के तहत के लिए अपनी परन्तु श्याम चालाको है तब श्याम करता
है कि पीत की आर्थिक की दोस्ती कह लेता है। " नहीं नहीं, नहीं ...
मेरे निदर्शण पीत पर इलाम मर लगाएं। मैं वाणिज्य हूं आप इस में यही
इलाम भुलकर मुझे पर आसक्त। मेरी भारी-पुरी हिंदी की बैठौ उठेदा।
मेरे छुट्टे जानता हूं, अप होग मुझे वधा दोला रहता है। क्या कानून का काम
रिप्ल सहूल इलाम करके विलो को जलवा कर देता है? मैं अपने पीत की माता
को जिम्मेदार बीत हो सकते हूं।" 1

1 - क्लेशवर को श्रेष्ठ कारिनया : क्लेशवर - पृ. 140-141.
3.2.8 पुरुष लता : कायलियोन परिवेश :

समाज में महाकाव्यावी कामवालो युवती कायलियो स्तर पर बिना निकले खालक्ष्य सिपाहियों के पुरुष द्वारा मानिसित कामण का विकास होता है।

भुलतो अनुपर को कहाँ एक और लुकारा नाम वन्दना महाकाव्य मुक्त है जो शोधर्षण है। वह दिल्ली में एक आर्थिक में नौकरी करते हैं। प्रतिदिन वह से भीड-भर्ड वर्ग थाके आदि

छाते हुए दूर वा सफर है। विस्फूरण वह से पहुँचे-पहुँचे प्रतिदिन उसके मन में दुनिया निकलता है। वह आर्थिक का कर्म देर से पहुँचने के कारण रजिस्टर में अत्य लगा न दे, जिसके एक दिन का पर्याय न कता जाय।

आर्थिक की कुछ लक्षित वाचनव प्रम्रहरू मिठा देर से आफिल आती है। फिर भी कर्म "चोपड़ा" उन्हें हुए है नहीं करता क्या वर्तमान वे एम.बी. आदि

की लड़ीक्षम है। कर्म के अन्वेषण के विश्व उसके मन में विश्वेष को भावना

वात होती है, वह मानिसित स्तर पर कर्म के स्वाय संभवत करती है। "हर

बार चोपड़ा से बुलाया आता है, तो वह अन्दर जाती हुई एक बारगी स्तम

लाती है। उसे हर बार लगता है, कभी न कभी चोपड़ा उसको एक काम

पर लगा देगा, नौकरों से निकल देने का नोटिस और वह कुछ नहीं कर सकेगी।

पर आज तक कुछ भी नहीं हुआ। फिर उसमें और चोपड़ा में कोल्हापूर चलता रहा था। आ दोनों एक दूसरे को नीचा दिखाने की पूरी कोशिशा।
बरने लेने है। चोपका दो-बार पेटाले और खुका है, देखिए, वाननाथों
साथ होते हुए हूसके दुःखनो माननी पड़ती है। और वह केवल हंसकर रह
जाती।

3.2.9.

पूर्व - अत्याचार एवं अभावाचार के प्रमुख संधर्म वि संधर्म ।

आपों किसी भी समय मानने को अपने दिशीके में देख सकती है
जिसका अनुमान यह वह भी नहीं कर पाता। निन्दकों को आरोपित अभाव के
कारण दयालों स्थित होते है वह उस पर कोई और समस्या आती है तो
यह और भी दुःखमंडी होता है।

पिपलाँडाश्च कहनी "लेन" को नानिया "मन्दरी"।
निम्नलिखित नारी है उसका पात्र रिकाया पहला है और परिवार का
पालन-पोषण करता है। एक दिन जब की रात लीला कुण्डु बड़ा मोदाम
क्षमा पश्चिम ताज़ा नीतियों का माल पुराता है। माल-पुराता की कार
से बपने दुःख हो नृसूम्ब में हालत है तो उसी माल हुंके में हालत है, उसमें
दीर्घ ही होते है उसकी नीन्द तो होता है। उसके अन्य देव ताधिक, उसी माल
का पला पूरे हुंके में आज शेक उसके पाठियों का पाठ रहता है पर पला नहीं
बलता। उसके ताधिक पला बलतवाने उसे पोटो लगते है उसी समय मन्दरी का पात्र
"दुःखाम " उस प्राचीन की वीड़ हुंकर किसी भी आदमी के हूटे लगाने को
गलतफ़त्मी से उसे बचाने दौड़ता है। छुटरों में से एक छुटेरा हुए का बला न बताने के कारण माल ख़ाए हुए हुंदेणे के पेट में हुए। मैं भूखा हूआ गलती से दूराराम के पेट लग जाता है।

दूराराम को अस्पताल में दाखिल किया जाता है मदेनदरी अपने बेबुआर पीत को सेवा करती तथा परिवार के लिए दोनों समय को रोटी बुटाता है मदेनदरी को पहूँचे में पुरित द्वारा गताह के लिए बार-बार हुलाया जाता है। तीनों हुंदेरों के विरोध में पुलिस दिये गये सिपाह की ख़र हुंदेरों को मिलती है हुए हुन के बाद मदेनदरी के घर पर दो अपरिपूर्व क्षण आते हैं और मदेनदरी को दूराराम को हुआ भूखने के सिलसील में पेले की गड़की बसलती है क्योंकि मदेनदरी उन तीन हुंदेरों की बनायें कर सकते थे। तै मदेनदरी से कहते हैं कि यदि वह पुलिस में उनकी बनायें करने से मुक लायकी हो। उसे वही पीढ़े जाये। मदेनदरी अपने पीत का साधा लेनेवालों का विरोध करती है वह कहते हैं कि --

"नौटों की गड़की उतावल शिकार कर से उनके मूँह पर मारते हुए हुए वह परे संकेत के बादबूढ़ दांत, पीली हुई घोंगी -- " माजक उठाने आये मन्द्वर माजक का २ उने दोई खिचना भी घार जाय, अपने मरद की जान को कीमत खायेना।"

"उतावो! गड़की ...... सिद्ध रासा आपों अमला ...... आपे मेरी बोलणा में पाँच नई फलग आप बुले ...... "! यहू हो सारुत्वकार एवं भूहटाचार के विद्वान नारी संघर्ष का विचार मिलता है।

-----------------------------
10. इस हमाम में - पिन्हा मुदगाल - प. 156.
परम्परा से पूर्व, मनुसूत्रित में उल्लेखित तथ्यों को लोकन का पूर्ण आधार बना कर नारी की विभिन्न स्थानों में सार्थक करने के उद्देश्य से परिवार में जाति की भूमिका निभाने लगा और भूमिका शोषण में स्थान अद्यावधि हुई।

स्वार्तुपोषक वाल में राजनीतिक, आर्थिक संग्रहात्मक रूप से परिस्थितियों से नारो-लोकन अवस्थान प्रभावित हुआ। नारी ने अपने स्वयं को समझा अर्थात् उसने अपने अभिलक्षण की पहचान की। क्षत्रियता के बाद वह संशोधन ग्रहण करने लगी जिससे उसके व्यक्तित्व में परिवर्तन के साथ उसके पिता के मूल्य दृष्टिकोण में परिवर्तन हो गया। आर्थिक अभाव के कारण आजीविका के लिए उसे बाड़ में निकलना पड़ा। पर्यावरण उत्पाद घर और बाड़ के कोष होने लगा। सामाजिक में वह दासी बनी हो बौद्ध धर्म में प्रवृत्त हुई।

राजनीतिक रंग कार्य है। क्षत्रियों की हिंदी कहानियों में कहानी कार्य में परिवार कर अथवा सामाजिक दंड में विचारधा में नारे शोषण का कारण रूप प्राप्त किया है। परिवार कर्मचारियों में पिलाना, पूरा का लोकयात स्वभाविक अभाव के कारण बनता है। परिवार अंदर रंग में परिवार के साथ, पारिवारिक शोषण, अनुप्राणिता, अधिकार-व्यापक, लापरवाही, आर्थिक अपमन, क्षुद्रों प्रतिक्रिया, अर्थव्यवस्था, चारित्रिक आरोप, अभाव के अभाव, आलोक के विशेष संघर्ष करते हैं। नारी की हिंदी के रूप में देवी द्वारा मानिए के तीनों अवधारणा के द्वारा भी संघर्ष करते हैं। तत्काल को समाज में पिलाने के सारण लंबाई चाहता है हिंदी क्षत्रियों में संघर्ष के अर्थ बदलते देख जाते हैं क्षत्रिय क्षत्रियों के कहानी की तात्कालिक रंग और सामाजिक का
पिकार बना कर शायरीरिक शोषण करता है। परम्परा से फे आ रहे
भाई-बहन संबंध में भाई के भ्य में पुरूष अंक संच सतत पर पूर्ण शिकार लिपा
को भंग करने परिवार द्वारा संक्षेप का प्रिंज़ क्षात्ज्योरित के नेतृत्व द्वारा
संच की परिलक्षण हुआ है। प्रत्येक घटक बुद्धादेश में अपने हो परिवार के ठद स्वयं
द्वारा उपेक्षा होता है पोते के भ्य में पुरुष अपनी दादी के साहित्य को
केवल समझता है विन्दु दादी अपने स्वामित्व के बोध द्वारा महत्व को
पत्तान के लिंग लिंग करते है। शायरीरिक स्तर पर पुरुष द्वारा उपर्युक्त
गोचर और साहित्य की सूची का श्रेष्ठ में स्वातंत्र्य तोरस समाज के व्यापक
क्षेत्र में अक्ष यहीं पूर्विकारे भुला ला धारण कर हो।

स्वातंत्र्यज्ञोरित हिंदी कथानी में सामाजिक स्तर पर प्रेमो-प्रेमिका
लंबाई में प्रेमो, प्रेमिका का लोकन शायरीरिक या मानसिक तरह पर करने
लगा। प्रेमी, प्रेमिका को न ही मां बनने का अपर देता है और न ही
सामाजिक निम्नांशालार उससे विचार करता है जिसके दिन के नारो मूक संघर्ष
करता है। वायुक पुरुष एक प्रेमिका से संतुष्ट नहीं होता बल्कि अनेक
सितारों को अपनी प्रेमिका बना बन उन्हें लाता है। इस प्राकृतिक पुरुष
भी एक परमी दा संतुष्ट नहीं होते वे स्वार्थुकार सब और र्यो से विचार
करते हैं जिसके दिन के दादि कथानियों में संघर्ष का प्रिंज़ हुआ है। जब कोई परिच
विचार के बाद भी अपनी परमी के शायरीरिक प्रेमिका से लगभग रखता है
या तो वह दोनों से लोक नहीं कर पाता दोनों भर्य प्रेम पर
अधार प्राप्त के लिंग लिंग करता है। यदि कोई प्रेमो, अपनी प्रेमिका
से आत्मगह प्रेम रखता है और सामाजिक भाय के बारें है अपना प्रेम प्रकट
नहीं करता बल्कि प्रेमिका का मानसिक स्तर पर शोषण करता है ऐसे प्रेमो के
दिन प्रेमिका संघर्ष करता है। स्वातंत्र्यज्ञोरित हिंदी कथानी में यह भी
देखा गया है कि प्रेम के स्त्र में पुरुष प्रेमिका से ही प्रेम सम्बन्ध नहीं रखता बल्कि उसकी छोटी बहन से भी वह प्रेम सम्बन्ध रोकित करता है ऐसे परिस्थितियों में दिल्लु प्रेमिका संघर्ष करता है। इस और कानों में अन्य प्रेमी ने तो सब पुरुष बनाने के लिए प्रेमिका संघर्ष करता है।

व्यावसायिक विद्वानों कानों में देखा गया देख विद्वान संघर्ष के स्त्र में ग्रामों संघर्ष करते है। सामाजिक परिवेश में पुरुष विद्वान नेता को अपनी वातान विद्वान का शिक्षा देना अग्रिम गोष्ठी शोध करता है। नागरिकों परिवेश में पुरुष द्वारा अन्याय के लिए आवाज उतारते नेता का धन के बल पर नागरिकों द्वारा बलात्कार का शिकार होते देखा गया है। सामाजिक मानव नागरिक अधिकार प्राप्त के लिए संघर्ष करते है। नागरिकों का सामाजिक शिक्षा नेता के गलतदृष्टि द्वारा भी कानों में देखा गया है। नागरिक का पालन के विचल नागरिक द्वारा संघर्ष करते है। मानव की नेता विद्वान ता में निर्देशित राष्ट्रीय निपटाया के कार्य लोगों के लिए बाल के पुरुष द्वारा मानविक गोष्ठी का शिकार होते है। वह इसके विद्वान मानविक स्तर पर संघर्ष करते है। निपटाया की नागरिक द्वारा अपील में पड़ते है लेकिन पैतृकों को हालात दो जाते है। किसी वह रूप से अत्याचार संघर्ष के विचरण संघर्ष करते है।

अतः व्यावसायिक विद्वान कानों में परिस्थिति अग्रिम सामाजिक स्तर पर पुरुष गोष्ठी के विचल नागरिक संघर्ष का उद्देश्य पुरुष द्वारा संघर्ष, शासक की शक्ति नागरिक गोष्ठी में परिवर्तित होने से है।